Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. VI, Issue No. XII, October-2013, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

# भारतीय शिक्षा और समाज परिवर्तन पर गांधी जी के विचारों का अध्ययन

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. VI, Issue No. XII, October-2013, ISSN 2230-7540

# भारतीय शिक्षा और समाज परिवर्तन पर गांधी जी के विचारों का अध्ययन

**Rajbir Singh**

---------------------------------X---------------------------------

भारत में अनेक ऐसे व्यक्ति हुए जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन भारतीय समाज को वर्ग रहित, शोषण रहित और सभी पकार के अन्यायों से मुक्त करवाने के लिए लगाया। महात्मा गांधी उनमें से एक हैं। उनका सम्पूर्ण जीवन भारत को स्वतंत्रा कराने व शोषण के विरुद्ध समर्पित कर दिया। गांधी जी देश को स्वतन्त्रा कराने के लिए विदेशी सत्ता ;ब्रिटिशद्ध से जूझते रहे तथा इसके लिए अनेकों बार उन्हें जेल की हवा खानी पड़ी। उन्होंने जाति–पांति, धर्म, साम्प्रदायिकता, भाषा, क्षेत्रा, वर्ण, वर्ग, पुरुष–स्त्री की असमानता, रंग–भेद की समस्या का आजीवन विरोध किया व सुधार के लिए प्रयत्नशील रहे। गांधी जी भारतीय समाज को एक लोकतांत्रिक समाज बनाना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने बाल–शिक्षा, स्त्री शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा, कमजोर वर्ग के लिए शिक्षा व सम्पूर्ण समाज का विकास करने के लिए बुनियादी शिक्षा का प्रचार व प्रसार किया। गांधी जी ने इस शिक्षा में मातृभाषा, निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा, उद्योग केन्द्रित व स्वावलम्बी आदि विषयों ;तथ्योंद्ध के साथ–साथ सामाजिक, आर्थिक, वैज्ञानिक, संगीत, कला, गणित, कृषि, सत्य, अंहिसा, सहनशीलता, मित्रता, बड़ों के प्रति आदर भाव व छोटों के प्रति प्रेम भावना एवं नैतिक भावना को आधार बनाया। परन्तु, इस बदलते हुए समय में, समाज में परिवर्तन आने व भारत सरकार द्वारा चलाई गयी नई–नई शिक्षा नीति के कारण तथा भारतीय पश्चिमी देशों की सभ्यता व संस्कृति को अपनाने के कारण गांधी जी के द्वारा चलाई गई आश्रम केन्द्रित बुनियादी शिक्षा में कमी आने लगी है। क्योंकि वर्तमान समय में शिक्षा नीति में नई–नई विधियां, नीतियां, तकनीकों, इंटरनेट व कम्प्यूटर प्रणाली आने के कारण बुनियादी शिक्षा की ओर आज के छात्रों का ध्यान कम होने लगा है। यह शोध इसी महान देश भक्त, राष्ट्र निर्माता, विद्वान व दार्शनिक के शिक्षा तथा समाज सम्बन्धी विचारों पर प्रकाश डालने तथा आज के परिवेश में पफैली हुई शिक्षा नीति को रोजगारयुक्त बनाने तथा राष्ट्र के लिए अंहिसा, प्रेम, एकता व ग्रामीण स्वराज्य पर गांधी जी के विचारों की कितनी महत्त्वता है, पर प्रकाश डाला जाएगा।

गांधी जी के शिक्षा और समाज संबंधी विचार ;सिन्तद्ध रूप रेखा में, स्वभाविक उद्देश्यों में आदर्शात्मक एवं पद्धति में व्यावहारिक है। उन्होंने अपने दर्शन में इन सिद्धान्तों का एक समन्वित एवं सामंजस्य रूप प्रदान किया ताकि समाज का सर्वांगीण विकास हो सके। उनके शिक्षा सम्बन्धी विचार उस समय स्वभाविक लगते हैं जब वो कहते हैं कि, बच्चे को स्वतंत्रा और हस्तक्षेप रहित वातावरण में शिक्षा देनी चाहिए। बच्चे की स्वाभाविक प्रवृत्ति एवं पूर्ण विकास के लिए पर्याप्त स्वतन्त्राता, अनुशासन एवं प्रशिक्षण देना चाहिए। उनकी नई तालीम इसी प्रकार के विकास के लिए अभिव्यक्ति थी। गांधी जी के विचार उद्देश्यों में आदर्शात्मक थे। उनका उद्देश्य न केवल आत्म ज्ञान था, बल्कि वे समाज को जाति, वर्ग, वर्ण व महिलाओं के प्रति हीनभावनाओं को समाप्त करना था। उनके विचार व्यक्ति को पूर्ण जीवन के लिए तैयार करते हैं। उनके अनुसार सर्वांगीण व्यक्तित्व के विकास के लिए आध्यात्मिक, बौद्धिक और नैतिक तथा शारीरिक विकास के साथ–साथ समाज में समानता, स्वतन्त्राता व बन्धुत्व का होना आवश्यक है। पद्धति में गांधी जी के सिद्धान्त व्यवहारिक थे। उनका उद्देश्य नैतिक, कलात्मक और संगठनात्मक क्षमता का विकास करना था।

गांधी जी के शिक्षा दर्शन में शिक्षा उत्पादन कार्य के माध्यम से प्रदान की जानी चाहिए। उत्पादन भी ऐसा नही जो बिजली का बटन दबाने से प्राप्त हो जाए, बल्कि उत्पादन ऐसा हो जो गाँव की ईकाई के आधार पर हो व उसमें शारीरिक, बौद्धिक, नैतिक व व्यवसायिक प्रक्रिया से सम्बन्धित हो। विश्व में जो भी शिक्षा का सही चिन्तन है वह इस बात पर बल देता है कि उत्पादन कार्य से शिक्षा देना ही सर्वोत्तम है। इसमें शरीर, मन, बुद्धि व आत्मा का समन्वित विकास होता है। गांधी जी का बुनियादी शिक्षा इसी सिद्धान्त पर आधारित ळें गाँधी जी की बुनियादी शिक्षा, निःशुल्क, मातृभाषा, उद्योग केन्द्रित व स्वावलम्बी सिद्धान्त पर आधारित है। उनके अनुसार, स्वावलम्बन और आत्मनिर्भरता का भाव अगर बच्चा प्रारम्भ से ही नही समझेगा तो बाद में स्वावलम्बन और आत्म निर्भरत की शिक्षा किसी व्यवसाय को एक विषय के रूप में पढ़कर प्राप्त नहीं की जा सकती। चरित्रा का निर्माण एक बढ़ते हुए वृक्ष के समान है कि यदि उसकी जड़ें प्रारम्भ से ही दुर्बल हों तो हो सकता है कि यही बात बच्चों के विकास पर भी लागू होती है। इस शिक्षा के आधार पर बच्चे नैतिक, आत्मिक, चरित्रा निर्माण व अपने को जीवन निर्माण के लिए तैयार कर लेंगे। हमारा आधुनिक शिक्षित समाज पाश्चात्य समाज बन गया है। इसने पाश्चात्य संस्कृति, भाषा, रहन–सहन, खान–पान व शिक्षा को अपना लिया है और जिसने भारतीय साहित्य, संस्कृति व शिक्षा को पूर्णतया से त्याग दिया है। यह शिक्षा संकीर्ण पुस्तकीय तथा ग्रामीण क्षेत्रों के लिए अनुपयुक्त है। इस शिक्षा में मंहगापन अधिक मात्राा में है, जिसके कारण कमज़ोर वर्ग शिक्षा को प्राप्त नहीं कर सकता।

आधुनिक शिक्षा के आधार पर बच्चों के अन्दर जागृति आ गई है। वे शिक्षण संस्थाओं में गुटबाजी, नारेबाजी, लड़ाई–झगड़े, हड़ताल, अध्यापकों व शिक्षकों के साथ झगड़ा करना, परीक्षा भवन में पेपर व सीटें को पफाड़ना, गुरुओं व माता–पिता की आज्ञा का पालन न करना, नशीले पदार्थों का सेवन करना, पिफल्में व भड़कीले चित्रों वाली पत्रा–पत्रिकाओं को पढ़ना, जिसके कारण वे उन पर चलकर समाज व देश को हानि पहुंचाते हैं, परन्तु गाँधी जी की बुनियादी शिक्षा दर्शन आधुनिक शिक्षा प्रणाली के विपरीत है, जिसमें मातृभाषा के साथ–साथ प्रान्तीय भाषा का भी समावेश है। यह शिक्षा अमीर–गरीब,

स्त्री–पुरुष, लड़के व लड़कियों को समान रूप से प्रदान की जाती है। गाँधी जी ने ऐसे आश्रमों, विद्यापीठों, गुरुकुलों व शिक्षण संस्थाओं को प्रारम्भ किया, जिनके आधार पर मनुष्य अपने आपको सम्पूर्ण जीवन के लिए तैयार कर लेता है। आधुनिक शिक्षा बेरोज़गार युक्त है। शिक्षा के समाप्त होने के पश्चात् छात्रा बेरोजगार घूमते हैं। यदि उनको रोज़गार नहीं मिलता तो, वे देश व समाज को दोषी ठहराते हैं और ऐसे विरोधी तत्वों के साथ मिल जाते हैं, जो देश में हिंसा, नारेबाजी, आतंकवाद, चोरी, डकैती, भ्रष्टाचार व तोड़पफोड़ आदि को बढ़ावा देते हैं व उनका प्रचार व प्रसार करते हैं। गाँधी जी की शिक्षा उद्योग केन्द्रित शिक्षा है, जिसको प्राप्त करने के पश्चात् बच्चों को बेरोज़गार रहना नहीं पड़ेगा, बल्कि वे रोजगार युक्त, कार्यशील एवं स्वावलम्बी बन जाएंगे।

गाँधी जी ने शिक्षा में प्रौढ़ शिक्षा, कमज़ोर वर्ग के लिए शिक्षा, स्त्री शिक्षा तथा स्वदेशी शिक्षा पर ज़ोर दिया। उन्होंने स्त्री शिक्षा के विषय में कहा कि, अगर घर या परिवार में स्त्रियाँ शिक्षित होंगी तो सारा परिवार शिक्षित होगा। आगे कहा कि छोटे लड़के व लड़कियों के लिए स्त्रियाँ ही सपफल अध्यापक हो सकती है इस प्रकार के ग्रामों के लाखों लोगों को पढ़ाकर एक रक्तहीन तथा महान् क्रान्ति ला सकती है। गाँधी जी के अनुसार, फसच्ची शिक्षा वह है जिसके द्वारा बालकों के शारीरिक, मानसिक एवं अध्यात्मिक विकास के मार्ग को प्रोत्साहन देना और उसके मार्ग में आने वाली बाधाओं को दूर करना तथा उनका सर्वांगीण विकास करना है, शिक्षा के द्वारा बच्चे पूर्ण जीवन के लिए तैयार होते हैं, जिससे वे समाज सेवा, राष्ट्रीय सेवा व समाज सुधार के लिए अपने आपको तैयार कर लेते हैं।

गाँधी जी ने समाज में पफैली जाति–पाति, वर्ण, वर्ग व्यवस्था का समाधान, समान श्रम व व्यवसाय को अपनाकर किया जा सकता है, क्योंकि यदि सभी जाति, वर्ण के लोग किसी काम को एक साथ मिलकर करेंगे तो उनके अन्दर पफैली ऊँच–नीच की भावना धीरे–धीरे समाप्त हो जाएगी। वे मानते थे कि यदि सभी जाति के बच्चों को, एक ही स्कूल में, एक ही प्रकार की शिक्षा मिलेगी तो उनके मन में बचपन से ही समानता का भाव उत्पन्न होगा, जिससे वे आगे चलकर समाज व राष्ट्र में एकता का बीज उत्पन्न करेंगे।

गाँधी जी समाज में महिलाओं की समस्या का समाधान सह–शिक्षा द्वारा करना चाहते थे। उनका मानना था कि, महिलाओं को ऐसी शिक्षा देनी चाहिए, जिसे वे समाज में एक समान जीवन रूपी गाड़ी को चला सके। शिक्षा के द्वारा उनमें इतना चरित्रा बल पैदा करना चाहिए कि वे जात–पात के भेद को मानना छोड़ दे, दहेज–प्रथा का विरोध करें, अन्धविश्वास व बाह्य आडम्बरों का विरोध करे, किसी भी जाति में अपने पसंद के पुरुष के साथ विवाह कर सके तथा उनका राष्ट्र के हर क्षेत्रा में समान स्तर पर योगदान होना चाहिए। तभी वे समाज के राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक व सांस्कृतिक क्षेत्रा में अपना समुचित योगदान देगी। आधुनिक समाज में असंख्य धर्म और सम्प्रदायों का बोल–बाला है, जिनके पूजा–पाठ, विधि और नीतियाँ अलग–अलग हैं। सभी धर्म अपने धर्म को उच्च व दूसरे को हीन समझते हैं। गाँधी जी ने माना कि सभी धर्मों के भगवान अततः एक हैं, नाम जुदा–जुदा हैं। आप चाहे उसे गौड, अल्लाह, खुदा, ईश्वर, भगवान कह लें सब एक ही है। ये आपस में कभी नहीं लड़े, क्योंकि वे निराकार सद्गुणों की खान थे, जिन्होंने भूली हुई आत्माओं को अपने सिद्धान्तों के सहारे मार्ग दर्शन किया। वे धर्म को नैतिकता मानते थे, जिसका मुख्य उद्देश्य लोगों में प्रेम, सहनशीलता, नैतिक–चरित्रा का विकास करना था। उन्होंने आगे कहा कि, व्यक्ति का हित, सबके हित में सम्मिलित हो, किसी को किसी भी व्यक्ति के साथ जाति–पाति, ऊँच–नीच का भेदभाव नहीं रखना चाहिए, क्योंकि सभी धर्मों का एक ही उद्देश्य है मानव का कल्याण करना, समाज में एकता व बन्धुत्व का भाव पैदा करना।

गांधी जी ने राजनीति को धर्म माना। उनका विश्वास था कि राजनीति को धर्म से अलग नहीं किया जा सकता। ये दोनों साथ–साथ चलते हैं, लेकिन जो धर्म को राजनीति से दूर करते हैं, वह राजनीति को नहीं जानते। अर्थात् राजनीति भी धर्म की तरह है, जो स्वार्थरहित भाव से दूर रखकर देश व समाज हित के लिए कार्य करे। धर्म और राजनीति में आत्मा और शरीर का सम्बन्ध है। धर्म से अलग राजनीति, राजनीति नहीं बल्कि पफांसी का पफंदा है, क्योंकि उससे आत्मा का हनन होता है। धर्म किसी मठ या सम्प्रदाय व पूजा विधि मात्रा नहीं। यह श्रेष्ठ गुणों की अभिव्यक्ति है जो कर्त्तव्य का बोध कराती ळें ग्रामीण समाज में आज भी अन्ध विश्वास, अशिक्षा, धार्मिक रूढ़िवादिता, निर्धनता, ऊँच–नीच व जाति–पाति का बोलबाला है। गांधी जी सर्वोदय समाज के आधार पर गांवों का विकास करना चाहते थे, जो स्वावलम्बन और तालिम शिक्षा के आधार पर हो। वे सम्पूर्ण ग्रामीणों ग्रामदान को प्रोत्साहन दिया, जिससे सभी के पास भूमि होगी और कोई भी भूमि से वंचित नहीं होगा। वे चाहते थे कि गांव हर क्षेत्रा में आत्म निर्भर हो। उनमें अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए स्वयं उत्पाद करने की क्षमता हो। जिसमें व्यक्ति के द्वारा व्यक्ति का शोषण न हो। उनमें जातिवाद व अस्पृश्यता की भावना न हो, बल्कि समानता व बन्धुत्व की भावना हो। उनमें स्वयं शासन करने की क्षमता व स्वयं आपसी झगड़ों का निपटारा करने की क्षमता हो तभी सम्पूर्ण ग्रामीण समाज का विकास होगा। आज के तकनीकी युग में विश्व के अधिकांश देशों में भयानक गरीबी और बेकारी पफैली हुई है। अधिकांश जनसंख्या झुग्गी–झोंपड़ियों व पफुटपाथों पर रहती है। उनके पास खाने के लिए भोजन, पहनने के लिए कपड़ा, रहने के लिए मकान नहीं और वे गन्दे स्थानों पर रहते हैं। गांधी जी इस प्रकार की स्थिति को स्वीकार नहीं करते। उनका मानना था कि, इस प्रकार की स्थिति के लिए हमारी अपनी उपेक्षा और अज्ञान ही जिम्मेवार है। भगवान ने हर एक को काम करने और अपनी रोज की रोटी से ज्यादा कमाने की शक्ति दी। जो इस क्षमता का उपयोग करने के लिए तैयार हो, तो उसे काम अवश्य मिल जाएगा। यदि सभी मनुष्य ईमानदारी से परिश्रम करेंगे तो कोई बेकार नहीं रहेगा। बल्कि वह अपना तथा अपने परिवार का निर्वाह अच्छे ढंग से चला सकेगा। यदि इस प्रकार की भावना सभी मनुष्यों में होगी तो समाज में कोई गरीब नहीं रहेगा।

गांधी जी समाज सम्बन्धी विदेशी चीज़ों के खिलापफ थे। उनका मानना था कि यदि भारत में एक भी वस्तु बाहर से न आई होती तो आज यह देश विकसित राष्ट्र होता। यह देश किसी दूसरे राष्ट्र की सहायता से रह सकता है, यदि वह केवल अपनी सीमा के अन्दर अपनी आवश्यकता की प्रत्येक वस्तु उत्पन्न कर ले। वे स्वराज्य और स्वदेशी शिक्षा को मानते थे। उनका मानना था कि, स्वदेशी हमारे अन्दर की भावना है जो हम पर प्रतिबन्ध लगाती है कि हम अपेक्षाकृत अधिक दूर के वातावरण को छोड़कर पास के वातावरण का प्रयोग करें और उसकी सेवा करें। स्वदेशी शिक्षा के विषय में उन्होंने कहा कि, शिक्षा का प्रारम्भिक माध्यम मातृभाषा न कि पाश्चात्य अंग्रेजी भाषा। मातृभाषा में यदि बच्चे पढ़ेंगे तो आसानी से किसी बात को अच्छी तरह से समझ पाएंगे। उन्होंने स्वदेशी स्वावलम्बन के लिए चरखे व तकली के प्रयोग पर जोर दिया क्योंकि चरखे के द्वारा वे अपना ही नहीं, बल्कि अपने बच्चों का पालन पोषण अच्छी प्रकार से कर सकेंगे और वे सूत

कातकर, अच्छे कपड़े बनाकर समाज व राष्ट्र के विकास में योगदान प्रदान कर सकेंगे। उन्होंने माना कि, चरखा सदा से ही भारतीय संस्कृति एवं परम्परा का हिस्सा रहा है। निरंकुश बढ़ते औद्योगिकरण से जीवन का तालमेल नष्ट होगा तथा हम जीवन की सरसता तथा सुन्दरता से वंचित हो जाएंगे। चरखा ही वह यन्त्रा है, जो जीवन के खोए छन्द को पुनः सजीव कर हमें परिपूर्णता का आभास कराता है। अतः उनकी स्वदेशी की भावना को हम न केवल सद्धान्तिक रूप में अपनाएं, बल्कि तन–मन से उसे व्यवहारिक रूप दें। इससे न केवल बुनियादी जरूरत पूरी होगी, बल्कि देश का चहुंमुखी विकास भी होगा। आज के इस उदारनीति वाले युग में हमें विदेशी वस्तुओं के साथ–साथ अपनी स्वदेशी वस्तुओं का भी प्रयोग करना चाहिए।

गांधी जी की शिक्षा और समाज सम्बन्धी विचारों की सफलताएें और विपफलताएें दोनों हैं। कुछ लोगों का मानना है कि बुनियादी शिक्षा के विशेष प्रकार के अध्यापकों की आवश्यकता है जो कि आसानी से उपलब्ध नहीं। उनकी शिक्षा योजना में अध्यापकों को अच्छा वेतन नहीं मिलेगा इसलिए वो झुंझलाहट का शिकार होंगे और बहुत कम अध्यापक सेवा की भावना से पढ़ाऐंगे। यह शिक्षा योजना विशेष रूप से ग्रामों के लिए निर्मित की गई थी। शहरों के लिए इसका प्रयोग सीमित था और उनकी शिक्षा केवल कुटीर उद्योग का रूप धारण करके ही रह जाएगी।

वर्तमान माल में विज्ञान का विकास अत्यन्त शीघ्रता से हो रहा है। प्रतिदिन नए–नए आविष्कार हो रहे हैं। ऐसे युग में कताई–बुनाई आदि जो मध्यकालीन उद्योग है, इसको मुख्य हस्तशिल्प बनाने से देश की औद्योगिक प्रगति रूक जाएगी। गांधी जी की शिक्षा एकांकी है, जो बालक के चहुंमुखी विकास की ओर कोई ध्यान नहीं देती। इस शिक्षा में बालक की शारीरिक एवं अध्यात्मिक शिक्षा की ओर कोई स्थान नहीं दिया गया। इसमें निश्चित पाठ्यक्रम का न होना, यह पाठ्यक्रम जाकिर हुसैन समिति तथा हिन्दुस्तानी तालीम संघ द्वारा तैयार किया गया था, जो कि अपने आप में पूर्ण नहीं। उस पर अभी और प्रशिक्षण करने की आवश्कयता है। उनकी शिक्षा सबके लिए उपब्ध नहीं। भारत के कुछ ही प्रतिशत नागरिक इस शिक्षा को प्राप्त करते हैं। गांवों में स्कूलों की कमी है जिसके कारण बहुत से ग्रामीण बच्चे अनपढ़ रह जाते हैं। भारतीय समाज में अस्पृश्यता की भावना ज्यादा है जिसके पफलस्वरूप ऊच जाति के लोग शिक्षा को प्राप्त कर लेते हैं और निम्न स्तर की जाति के लोग शिक्षा से वंचित रह जाते हैं। उनकी शिक्षा सार्व–लौकिक न होगा। उसमें स्त्राी–शिक्षा व प्रौढ़ शिक्षा के अभाव के कारण स्त्रियां व प्रौढ़ शिक्षा से वंचित रह जाते हैं।

गांधी जी सर्वोदय समाज और ग्रामीण समाज का विकास ट्रस्टीशिप के द्वारा चाहते थे। जिसके आधर पर सम्पूर्ण ग्रामीण समाज श्रमिक और जमींदार होगा। सभी के पास समान भूमि और सम्पत्ति होगी। जिससे सम्पूर्ण ग्रामीण समाज में समानता, एकता व बंधुत्व का भाव पैदा होगा जो कि राष्ट्र के विकास के लिए सहायक होगा। परन्तु आधुनिकरण और औद्योगिककरण युग ने उनके विचारों को प्राचीन विचार कहकर छोड़ दिया, इनका मानना है कि यह तकनीकी विकास के लिए सहायक नहीं। गांधी जी मशीनीकरण के विरोधी थे उन्होंने स्वदेशी को अपनाने पर बल दिया। उनका मानना था कि इससे बेकारी, बेरोजगारी, अधिक मात्राा में पफैलेगी और भारत प्रगति की ओर न बढ़कर पीछे गिर जायेगा।

गांधी जी भारी उद्योग के खिलापफ थे तथा उन्होंने हाथ से काम करने पर बल दिया जो कि भारत को तकनीकी क्षेत्रा में आगे बढ़ाने में सहायता प्रदान करेगा। वे सभी को श्रमिक, पूंजीपति और उद्योगपति बनाना चाहते थे। गांधी जी विदेशी व्यापार के विरु... थे। उनका मानना था कि, यदि भारत के बाहर से एक वस्तु न आई होती तो आज यह देश दूध व शहद से भरपूर होता। यह देश अपने आप दूसरे की सहायता से रह सकता है। अर्थात् वे कुटीर उद्योग को बढ़ावा देते थे, जिससे इस देश की औद्योगिक प्रगति रुक जाएगी।

वर्तमाल काल में विज्ञान व तकनीकी का विकास अत्यन्त शीघ्रता से हो रहा है। प्रतिदिन नए–नए आविष्कार हो रहे हैं, ऐसे युग में कताई–बुनाई अर्थात् स्वदेशी मध्यकालीन उद्योग है। इसको अपनाने से देश की औद्योगिक प्रगति रुक जाएगी। देश औद्योगिक राष्ट्र न बनकर पिछड़ जाएगा। भले ही इस योजना में कमियां हों परन्तु इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि आधुनिक विश्व में गांधी जी के शिक्षा व समाज सम्बन्धी विचारों की सार्थकता यह कि है उन्होंने शिक्षा व समाज को संकुचित दृष्टिकोण से नहीं देखा, बल्कि उनकी योजना सार्वभौमिक सिद्धान्तों पर आधारित थी। गांधी जी निःसंदेह शिक्षा शास्त्राी व समाजशास्त्राी थे। उनके शिक्षा योजना में बेरोजगारी नहीं थी, जो आज की आधुनिक शिक्षा योजना में है। उनकी शिक्षा आत्म–निर्भरता, सर्वांगीण तथा स्वावलम्बी थी। उनके समाज सम्बन्धी विचार समाज को समानता, एकत्व व बंधुत्व के सूत्रा में बांधने वाले थे। इसी बन्धुत्व के आधार पर वे विश्व–कल्याण तथा शान्ति का भाव पैदा करना चाहते थे।

## संदर्भ ग्रंथ सूची


1. गाँधी, महात्मा आत्मकथा, नवजीवन प्रकाशन, नई दिल्ली, 1970

2. गाँधी, महात्मा गाँधे जी की आटोबायोग्रापफी, नव जीवन पब्लिकेशन, दिल्ली, 1956

3. गाँधी, महात्मा सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा, सस्सा साहित्य मण्डल, दिल्ली, 1967

4. गाँधी, महात्मा सच्ची शिक्षा, नव जीवन प्रकाशन, नई दिल्ली, 1970

5. गाँधी, महात्मा बुनियादी शिक्षा, नव जीवन प्रकाशन, अहमदाबाद, 1965

6. गाँधी, महात्मा बुनियादी तालीम नव जीवन प्रकाशन, नई दिल्ली, 1970

7. गाँधी जी हिन्दुस्तानी तालीम, सस्ता साहित्य मण्डल, दिल्ली, 1971

8. गाँधी, महात्मा भारतीय शिक्षा की समस्यायें, नवजीवन प्रकाशन, नई दिल्ली, 1956

9. गाँधी जी नई तालीम, सस्सा साहित्य मण्डल, दिल्ली, 1971

10. गाँधी, एम॰के॰ टू वर्डस न्यू एजुकेशन, नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद, 1970

11. गाँधी, एम॰के॰ थ्यूरी ऑपफ ट्रस्टीशिप ईडस्ट पिटमैन, पब्लिकेशन, लंदन, 1995

12. गाँधी एम॰के॰ इकोनॉमिक्स एण्ड इंडस्ट्रियल लाईपफ एण्ड रिलेशन नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद, 1959